B.A Part-II

Social Psychology

(Paper-IV)

Chapter-5

Dr Usha Choudhary

Problems of Social change or Resistance to Social change (सामाजिक परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध):-

सामाजिक परिवर्तन की कई विशेषताओं में एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें प्रतिरोध (Resistance) या समस्या का तत्व शामिल होता है। जब-जब सामाजिक परिवर्तन होने लगता है कुछ लोगों द्वारा उसका विरोध किया जाता है। प्रश्न यह उठता है कि लोग ऐसे सामाजिक परिवर्तन का विरोध क्यों करते हैं? वे कौन-कौन से कारक हैं जिनसे सामाजिक परिवर्तन की दिशा में रुकावट आ जाती है या समस्या उत्पन्न हो जाती है। समाज मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने मिलकर कुछ ऐसे ही कारकों की पहचान की है जो निम्नांकित है:—

1. **स्थिरता की इच्छा (Desire for Stability):→** समाज के अधिकांश लोग सामाजिक स्थिरता चाहते हैं। वे मौजूदा सामाजिक मूल्यों एवं मानकों का परित्याग नहीं करना चाहते हैं चाहे वह कष्टकर क्यों न हो। इसका प्रधान कारण यह है कि वे लोग उन मूल्यों एवं मानकों के प्रति समायोजित हो जाते हैं और उससे उनके मन में स्थिरता का भाव रहता है। परन्तु जब उन्हें ऐसे मूल्यों एवं मानकों का परित्याग करके नये मूल्यों एवं मानकों को अपनाने के लिए कहा जाता है, तो उनके मन में अस्थिरता तथा अनिश्चितता का भाव उत्पन्न हो जाता है। वे इन नए मानकों, मूल्यों एवं विश्वासों के संभावित प्रभावों के प्रति आशंकित हो उठते हैं अतः वे सामाजिक परिवर्तन में समस्या उत्पन्न करते हैं।

2. **अज्ञानता (Ignorance):→** सामाजिक परिवर्तन का प्रतिरोध लोग अज्ञानतावश भी करते हैं। जब-जब लोगों के सामने सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न करने के ख्याल से कोई नयी खोज या अनुसंधान को सामने प्रस्तुत किया जाता है तो उसकी उपयोगिताओं के बारे में अज्ञानता के कारण आशंकित हो उठते हैं, और उसे ठुकरा कर अपने पुराने मूल्यों एवं विश्वासों में चिपके रहना ही अधिक पसंद करते हैं। इससे सामाजिक परिवर्तन में समस्या उत्पन्न हो जाती है

3. व्यक्तित्व कारक (Personality Factors):→

कई अध्ययनों से पता चला है कि लोगों की व्यक्तिगत आदत, मनोवृत्ति तथा अन्य प्रवृत्तियों (Predispositions) से भी सामाजिक परिवर्तन में प्रतिरोध या समस्या उत्पन्न होती है। ऐसी आदतें एवं मनोवृत्तियाँ व्यक्ति को पुराने मूल्यों, विश्वासों एवं मानकों के साथ चिपके रहने के लिए बाध्य कर देती हैं जिससे सामाजिक परिवर्तन की गति अवरुद्ध हो जाती है। जैसे वेलिन (Wellin, 1955) ने एक अध्ययन किया जिसमें पेरू एक गाँव में Typhoid तथा जल-जनित रोगों (Water born diseases) से लोगों को बचाने के लिए उचित पानी को उबाल कर पीने तथा ऐसे उबले हुए पानी के स्वास्थ्य मूल्यों (hygienic values) को लोगों को समझाया। परिणाम में देखा गया कि काफी प्रयत्नों के बावजूद अधिकांश लोगों ने उबले हुए पानी को व्यवहार में लाने से इनकार कर दिया। विश्लेषण से यह पता चला कि इन जलजनित बीमारियों की उत्पत्ति के बारे में उनका अपना एक खास विश्वास था तथा उनकी नजर में उबले हुए पानी पीने तथा रोग की उत्पत्ति में कोई स्पष्ट संबंध नहीं था। अतः वे लोग प्रयोगकर्ता के प्रयास से अप्रभावित रहे। अतः स्पष्ट है कि व्यक्तियों की अपनी मनोवृत्ति एवं विश्वास से सामाजिक परिवर्तन के रास्ते में बाधा उत्पन्न होता है।

इसी प्रकार Rogers & Shoemaker (1971) ने भी एक ऐसा अध्ययन किया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि लोगों की अपनी मनोवृत्ति, विश्वास एवं आदत से सामाजिक परिवर्तन में काफी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। दवा बेचने वाली एक अमेरिकन कम्पनी द्वारा एनालोज जो एक नयी दवा थी जिसमें दर्द को कम करने तथा पेट को ठीक रखने दोनों का गुण था, का प्रचार किया गया। यह दवा एक टेबलेट के रूप में था जिसे मुँह में रखकर उसे चूस-2 कर आसानी से खाया जा सकता था। परिणाम में देखा गया अधिकांश अमेरिकन एनालोज को दवा के रूप में खाने से इनकार कर दिया क्योंकि उनकी आदत दवा को पानी के साथ निगलकर खाने की थी न कि मुँह में रखकर चूसने की। बहुत जतन एवं खर्चीले उपयोगों के बावजूद भी एनालोज की बिक्री नहीं हो सकी और कम्पनी को अंत में इस दवा को बाजार से वापस ले लेना पड़ा।

उपर्युक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि लोगों का अपना विश्वास, आदत एवं मनोवृत्ति से भी सामाजिक परिवर्तन में समस्या या प्रतिरोध उत्पन्न होता है।

4. **आर्थिक लागत (Economic cost)** :→ सामाजिक परिवर्तन के रास्ते में सबसे प्रमुख बाधक आर्थिक लागत बतलाया गया है। जिन समाज में आर्थिक साधनों की कमी होती है वहाँ के लोग अति आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों एवं उपलब्धियों का फायदा उठाने से वंचित रह जाते हैं जिससे सामाजिक परिवर्तन में अवरुद्धता आ जाती है। डी फ्लेउर, डीएन्टोनियो एवं डी फ्लेउर (Defleur, D'Antonio & Defleur, 1976) ने एक अध्ययन किया जिसमें पाया कि गरीब देश के लोग कुछ आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों से इसलिए वंचित रह जाते हैं क्योंकि उसका आर्थिक भार वहन नहीं कर सकते हैं। इसलिए वैसे देशों में ऐसा सामाजिक परिवर्तन के राह में अत्यधिक बाधा पहुँचती है। शायद भारत की गरीबी इस देश में आणविक ऊर्जा पर आधारित परिवर्तन लाने में आज भी एक महत्वपूर्ण प्रतिरोधक सिद्ध हो रही है।

5. **सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक विश्वास (Social, Religious and Cultural beliefs)** :→ सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक विश्वास भी सामाजिक परिवर्तन के रास्ते में अवरोध खड़ा करते हैं। भारत जैसे देश में जहाँ हिन्दुओं की संख्या अधिकतम है यदि कोई व्यक्ति गाय के मांस को आम लोगों द्वारा खाने तथा उसके गुणकारी उपयोगिताओं का व्याख्यान करके उसे लोकप्रिय बनाने की कोशिश करे तो वह सफल नहीं होगा क्योंकि हिंदुओं में गाय का मांस खाना सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक विश्वास के विरुद्ध माना जाता है। हिंदुओं के लिए गाय माता सदृश होती है। अतः इससे संबंधित परिवर्तन हिंदु समाज में सफल नहीं हो पाएगा।

(6) निहित स्वार्थ (vested interest) :→ सामाजिक परिवर्तन में लोगों के निहित स्वार्थ के कारण भी बाधा पहुँचती है। कुछ लोग सामाजिक परिवर्तन का विरोध इसलिए करते हैं कि संबंधित सामाजिक परिवर्तन हो जाने से उनका नुकसान होगा। जैसे- सरकार जब-जब शराब दारु तथा अन्य समान पेय पदार्थों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाती है, इन सबसे संबंधित रोजगार धंधे में लोग व्यक्ति उसका काफी विरोध करते हैं क्योंकि वे यह समझते हैं कि ऐसे प्रतिबंध से उनके धंधों को नुकसान होगा। स्पष्ट हुआ कि निहित स्वार्थ से सामाजिक परिवर्तन में प्रतिरोध उत्पन्न हो जाता है

7. बौद्धिक उदासीनता (Intellectual Laziness) :→ सामाजिक परिवर्तन की दिशा में बौद्धिक उदासीनता से भी प्रतिरोध उत्पन्न होता है। सामाजिक परिवर्तन के लिए आवश्यक है कि लोगों में बौद्धिक जागरूकता हो तथा वे होने वाले सामाजिक परिवर्तन पर बौद्धिक विचार-विमर्श (Intellectual discussion) करें। उसके अनुकूलता तथा प्रतिकूलता को समझें परन्तु यदि ऐसा नहीं होता है और अधिकांश लोग बौद्धिक उदासीनता बनाए रखते हैं अर्थात् होने वाले परिवर्तन के प्रति तटस्थ रहते हैं, तो इससे सामाजिक परिवर्तन में प्रतिरोध या समस्या उत्पन्न हो जाता है

स्पष्ट हुआ कि सामाजिक परिवर्तन में कई कारणों से प्रतिरोध (Resistance) उत्पन्न होता है। सामाजिक परिवर्तन लाने वाले नेता या अन्य व्यक्तियों को इन प्रतिरोधों या समस्याओं से अवगत होना चाहिए।